

जैन धर्म में दिवाली महत्व - Loftiness of Divali/Diwali

Festival of lights as per Jainism – वीर निर्माण संवतः 2538 – Happy New Year

दिवाली व धन तेरस मनाये क्यों गोबर्धन/? लक्ष्मी, गणेश व सरस्वती क्या और क्यों ? IT CAN CHANGE YOUR WAY OF THINKING, WHICH CALLED "RIGHT PERCEPTION" DO CONSIDER & DON'T MISS IT , BILINGUAL - ENGLISH/HINDI

----- जैन धर्म महावीर भगवान से पहले भी अस्तित्व में था, महावीर भगवान 24वे गुरु तीर्थंकर तथा संशोधक थे, पर धर्मपुस्तक, पाण्डुलिपि, इतिहास, विवरण भांति की अज्ञानता के कारण महावीर भगवान को जैन धर्म का संस्थापक मान लिया गया ! हालांकि कुछ वर्षों में इसमें संशोधन भी किया गया है और श्रमण संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर आदि-ब्रम्ह वृषभदेव को कर्म भूमि के प्रवर्तक के रूप में स्वीकार किया जा रहा है !

----- दिवाली जैन धर्म में भगवान् महावीर स्वामी के मोक्ष प्राप्ति के स्मरणोत्सव [स्मरण के उत्सव] के रूप में मनाये जाने वाला पर्व है, दिवाली के दिन प्रातः महावीर स्वामी को मोक्ष [कार्तिक कृष्णा अमावस, प्रत्यूष बेला - हरिवंश पुराण] तथा उनके सर्वोच्च शिष्य गणधर गौतम स्वामी को संध्याकाल के समय केवलज्ञान प्राप्त हुआ [उत्तर पुराण] इसलिए ये दिन स्मरण के उत्सव के रूप में मनाया जाता है, कार्तिक कृष्णा अमावस के प्रत्यूष बेला के समय में महावीर भगवान ने मुक्ति प्राप्त की तथा हमेशा के लिए संसार छोड़ दिया, वे मोक्ष के विराजमान होगये , अब वे कभी संसार में वापस नहीं आएंगे , उनके मुक्ति के कारण से भाव दीपक मन्द हो गए, तथा वातावरण अंधकार में बदल गया, इस वजह से जो वहां पर मौजूद थे उन्होंने द्रव्य दीपक जलाये, तब से दिपालिका पर्व जैन धर्म में मानना आरम्भ हुआ, ये महावीर स्वामी के मोक्ष तथा गौतम गणधर के केवलज्ञान होने का अध्यात्मिक उत्सव है, ना की संसारी सुख का !

----- दिवाली के बारे में हरिवंश पुराण में उल्लिखित मिलता है जो आचार्य जिनसेन जी ने लिखा है: दिपालिका [दीपक की ज्योति], उस दिन महावीर स्वामी को मोक्ष होने से पावगिरी दीपक की ज्योति से प्रकाशित होगई थी, इस कारण से भारत की जनता ने दिपालिका पर्व उत्सव जिनेन्द्र भगवान [महावीर भगवान] की पूजा करके विशेष मनाया! जैसा कि आचार्यश्री पूज्यपाद स्वामी ने निर्वाण भक्ति में कहा है --- तीर्थंकर भगवान महावीर ने बिहार प्रांत के पावापुरी नगर में जलमंदिर से समस्त कर्मों का नाश कर मोक्षधाम को प्राप्त किया था !

----- प्रभु वीर ने विपुलगिरी पर्वत पर प्रथम देशना में जो परमात्मतत्त्व बताया, अंतिम देशना में पावापुरी में भी वही परमात्मतत्त्व बताया। प्रभु की वाणी द्वारा परम शांत चैतन्यरस का पान करके लाखों-करोड़ों जीवों तृप्त हुए। गणधर गौतमदेव ने भी उत्कृष्टपने वीतराग-रस का पान करके केवलज्ञान की तैयारी की। तीर्थंकर प्रभुने सिद्धपद की तैयारी की, तो गणधरदेव ने अरिहंतपद की तैयारी की....तो प्रतिगणधरदेव ने (सुधर्मस्वामी ने) श्रुतकेवली होने की तैयारी की। वाह, भगवंतों! धर्मकी अछिन्नधारा आपने पंचम कालमें बहती रखी।

----- भगवान महावीर को मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति हुई और गौतम गणधर को कैवल्यज्ञान की सरस्वती की प्राप्ति हुई, इसलिए लक्ष्मी-सरस्वती का पूजन इस दिन की जाती है। जैन धर्म में लक्ष्मी का अर्थ होता है निर्वाण और सरस्वती का अर्थ होता है कैवल्यज्ञान, इसलिए प्रातःकाल जैन मंदिरों में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण उत्सव मनाते समय भगवान की पूजा में लड्डू चढ़ाए जाते हैं। लड्डू गोल होता है, मीठा होता है, सबको प्रिय होता है। गोल होने का अर्थ होता है जिसका न आरंभ है न अंत है। अखंड लड्डू की तरह हमारी आत्मा होती है जिसका न आरंभ होता है और न ही अंत। लड्डू बनाते समय बूँदी को कड़ाही में तपना पड़ता है और तपने के बाद उन्हें चाशनी में डाला जाता है। उसी प्रकार अखंड आत्मा को भी तपश्चरण की आग में तपना पड़ता है !

----- धन्य त्रयोदशी [धन तेरस - धन्य तेरस] जी हा.. जैन धर्म में धन्य तेरस का बहुत महत्व है लेकिन वैसा नहीं जैसा हम लोग मानते हैं की सांसारिक लक्ष्मी तथा धन का पूजा करो नहीं, उस दिन को धन्य माना गया क्योंकि उस दिन के बाद भगवान ने योग निरोध किया तथा अमावस्या को मोक्ष प्राप्त कर लिया, वीर प्रभु के योगों के निरोध से त्रयोदशी धन्य हो उठी, इसीलिये यह तिथि " धन्य-तेरस [त्रयोदशी]" के नाम से विख्यात हुई लेकिन समय से प्रभाव से यह धन्य त्रयोदशी - धनतेरस में फिर सिर्फ धन की पूजा होने लगी ! धन-तेरस के दिन और दीपावली के दिन लोग धन-संपत्ति, रुपये-पैसे को लक्ष्मी मान कर पूजा करते हैं जो सर्वथा अयुक्तियुक्त है। विवेकवान जनों को इस पावन-पर्व के दिनों में मोक्ष व ज्ञान लक्ष्मी तथा गौतम गणधर की पूजा करनी चाहिये जो कि समयानुकूल, शास्त्रानुकूल, प्रामाणिक तथा कल्याणकारी है।

----- जब पंचम काल शुरू होने में 3 वर्ष 8 महिने और 15 दिन बाकी थे। चौथा काल अभी चल रहा था। प्रभु महावीर का विहार बंध हुआ, वाणी का योग भी मोक्षगमन के दो दिन पहले (धन तेरस से) बंद हुआ। जनता समझ गई की अब प्रभुके मोक्ष गमनकी तैयारी है। देशोदेशके राजाओं तथा प्रजाजनों भी प्रभु के दर्शन के लिए आ पहुंचे। एक परम वैराग्य के वातावरणका सर्जन हुआ। भले ही वाणी बंध थी पर प्रभुकी शांतरस झरती मुद्रा देखकर भी अनेक जीवों धर्म प्राप्त कर रहे थे। गौतम इत्यादि मुनिवरों अधिक से अधिक एकाग्र होते थे। प्रभुकी हाजरी में प्रमाद छोड़कर कई जीवों ने सम्यकदर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना शुरू

कर दी। इस तरह अश्विन कृष्ण त्रयोदशी एवं चतुर्दशी...यह दो दिन देवेन्द्रों तथा नरेन्द्रों ने सर्वज्ञ महावीर तीर्थकर की अंतिम महापूजा की, वहां मोक्ष के उत्सवका बड़ा मेला लगा था...संसार को सब भूल चुके थे और मोक्ष के महिमा में ही सब मशगुल थे !

----- अगले दिवस चतुर्दशी को भगवान महावीर ने 18000 शीलों की पूर्णता को प्राप्त किया। वे रत्नत्रय की पूर्णता को प्राप्त कर अयोगी अवस्था से निज स्वरूप में लीन हुए। इस पर्व दिवस “रूप-चौदस” के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए व्रतादि धारण कर स्वभाव में आने का प्रयास करना चाहिये।

----- भगवान की दिव्यध्वनि स्यात्, अस्ति-नास्ति .अवक्तव्य आदि सात रूपों में खिरी थी इसलिये यह दिन “गोवर्द्धन” के रूप में मनाया जाता है। “गो” अर्थात् जिनवाणी तथा वर्द्धन का अर्थ प्रकटित वर्द्धित। क्योंकि गौतम स्वामी को केवलज्ञान हो गया तो इस दिन जिनवाणी का दुबारा वाणी खिरी !इस दिन तीर्थकर की देशना के पश्चात् पुनः जिनवाणी का प्रकाश हुआ, वृद्धि हुई इसलिये जिनवाणी की पूजा करनी चाहिये।

----- दिवाली के रात्रि में बही पूजन के समय लक्ष्मी और गणेश की पूजा की प्रथा है उसमें भी रहस्य है. उसी दिन पावापुर में भगवान् महावीर के मोक्ष जाने के बाद सायंकाल में श्री गौतम गणधर को केवलज्ञान प्रगट हुआ था तत्क्षण ही इन्द्रों ने आकर उनकी गन्धकुटी की रचना करके उनके केवलज्ञान की पूजा की थी. 'गणानां ईशः गणेशः, गणधरः' ये पर्यायवाची नाम श्री गौतमस्वामी के ही हैं. सब लोग इस बात को न समझकर गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे. वास्तव में गणधर देव की केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए. खास कर जैनों को तो यही कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का नूतन वर्ष मनाना चाहिए, और मिथ्या देवों की पूजा ना कर के गणधर एवं केवलज्ञानमहालक्ष्मी की पूजा ही करनी चाहिए. दीपक केवलज्ञान रूपी ज्योति का प्रतिक है , हमको अंधकार रूपी मोह का नाश करना है केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए..हमें महावीर भगवान - मोक्ष लक्ष्मी तथा गौतम स्वामी - गणों में ईश की पूजा करने चाहिये, जो हम लौकिक गणेश तथा लक्ष्मी पूजा करते हैं वो जैन धर्म में नहीं है, इस बारे में हम शास्त्रों तथा ग्रंथों से पढ़ सकते हैं तथा मुनिराज से इस बारे में पूछना चाहिये , यह गृहीत मिथायात्व कर्मबंध होता है ! ऐसा भी नहीं सोचना की हम तो करते आ रहे हैं क्या होगा अगर छोड़ दिया इन लक्ष्मी गणेश की पूजा करना! अरे अगर करते रहे तो क्या होगा ये भी तो सोचो ना ! धर्म का सही स्वरूप ग्रहण करे ! इस बारे में आचार्य, साधू, विद्वान् जनों से विचार ले !

----- चतुर्दशी की रात हुई, मध्य-रात भी बीती और...पिछली रात को (अमावस्या की सुबह होने से पहले) वीरनाथ सर्वज्ञ परमात्मा तेरहवा गुणस्थान पार करके चौदहवें गुणस्थान में अयोगी-पने विराजमान हुए। परम शुक्लध्यान (तीसरा एवं चतुर्थ) प्रकट करके बाकी के अघाती कर्मों की संपूर्ण निर्जरा होने लगी। और क्षणभर में प्रभु सर्वज्ञ भगवान महावीर मोक्षभावरूप परिणमित हुए, तत्क्षण ही सिद्धालयरूप मोक्षपुरी में पधारे। आज भी वे सर्वज्ञ परमात्मा वहां शुद्ध स्वरूप अस्तित्वमें विराजमान हैं...उन्हें अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार हो....नमस्कार हो....नमस्कार हो !

----- पटाको से लाभ ??? दीपावली मनाएँ पर किसी का दीप न बुझे, किसी का घर न जले। तभी सार्थक होगी दीपावली। आपकी आतिशबाजी का जोरदार धमाका पशु-पक्षियों और जानवरों की नींद ही हराम नहीं करता, बल्कि उन्हें भयभीत कर अंधा, बहरा करके मौत के मुँह में भी डालता है। विषैला और जहरीला यह बारूद का धुआँ वातावरण को प्रदूषित कर स्वास्थ्य और पर्यावरण का नाश करता है। कुछ मिनट के enjoy के लिए लाखों रुपये बर्बाद हो जाते हैं, अगर कहीं आग लग जाती है तो पता नहीं कितनी संपत्ति का नुकसान होता है अगर कोई जल जाता है, किसी के कोई अंग खराब हो जाता है, कभी तो शरीर में आग से इतना नुकसान होता है जिसका कोई इलाज नहीं गर्भस्थ शिशु को नुकसान, वायु, जल, अग्नि, ओजोन परत को नुकसान, आँखों और कानों का बुरा प्रभाव, global warming का खतरा, किसी भी धर्म में हिंसा का उपदेश नहीं, पटाके इश्वर की वाणी का अपमान !! छोटे छोटे अरबों जीव-जंतु की हत्या !! हम क्या आतंकवादी से कम हैं !! सोचो....और तो और पटाके बनाने की फैक्ट्री में देखो...कारीगरों की जिंदगी से खिलवाड़...

----- अगर हम इस दिवाली के दिन हुए धटनाक्रम को प्रतिक रूप में ले तो महावीर स्वामी का मोक्ष उनके आत्मा के लिए कल्याणकारी है और गौतम स्वामी का केवलज्ञान होना उनके आत्मा के लिए कल्याणकारी होने के साथ साथ लोक कल्याण में भी सहायक है ये दिवाली का पर्व आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण का भी पर्व है !

----- अगर हम रंगोली बनाये तो संस्कारों की रंगोली बनाये ! दीपक जलाये तो विश्वास के दीपक जलाए ! पूजा करे भगवान् की तो आस्था की पूजा करे ! घर की सजावट करे तो सदभावना की सजावट करे ! गुडधानी अगर बाटते हैं तो स्नेह की गुडधानी बाटे ! अनार जलाते हैं तो आशाओं के अनार जलाये ! वंदनबार बांधे तो ज्ञान के वादनबार बांधे ! द्वार सजाये तो विनय से सजाये ! पटाके फोड़े तो प्रसन्नता के फोड़े ! फूलजड़ी जलाये तो प्रेम की फूलजड़ी जलाए ! कलश रखे तो परम्पराओं के रखे और उसपर श्री फल संयम का हो और नैतिकता का उसपर स्वस्तिक बनाये तो वास्तव में हम गुणों की उपासना कर सकते हैं !!

Jainism existed before Tirthankara Mahavira. He was one of the supreme teacher (Tirthanakara) and a reformer but due to ignorance of scriptures, manuscripts and history misconceptions considered founder of Jainism. However, now has been amendments to the history and accepted existence of Tirthankara Parsvanatha preceded Lord Mahavira by 250 years, now has been publishing Tirthankara Adinatha first Tirthankara as Jain literature mention.

Divali [splendor of lamps] in Jainism is the jubilation to commemorate the salvation, According Harivansa Purana, Tirthankara Mahavira Swami had attained Nirvana just before the dawn of the Amavasya (new moon, early next morning) and According to Uttara Purana, The chief disciple of Mahavira, Gautama Svami Ganaghara also had attained complete knowledge or enlightenment (Kevalajnana) on this day in evening [dusk time]. Thus, the making Divali one of the most important Jain festivals.

On that day Mahavira attained emancipation and relinquished this universe forever. He sat on the salvation. He will never return from there. His emancipation caused extinguishes of Bhav Deepak [darkness] and turned the atmosphere into darkness and hence those who were present at that time lighted Dravya dīpaka [clarified butter's lamp]. Dipavalee festival since then commenced for Jains. It is celebration of Nirvana of Tirthankara Mahavira and Kevalajnana of mahavira chief disciple Gautama Ganadhara. It is not an enjoyment of worldly pleasures, isn't it? We also have to wish get salvation as early as can break the karmic bondage.

Dipalika roughly translates as "light leaving the body". Dipalika, which can be roughly translated as "Splendiferous light of lamps", is used interchangeably with the word "Divali".

Divali is the first referred in Harivansa purana written by Acarya Jinasena as dipalika (splendour of lamps). In his words the gods illuminated Pavagiri by lamps to mark the occasion. Since that time, the people of India celebrate the famous festival of Dipalika to worship the Jinendra (i.e. Lord Mahavira) on the occasion of his Nirvana: As Acarya Sri Pujiyapada svami mentioned in the Nirvana bhakti – Tirthanakra Mahavira had break the all karmic bondage and attained Nirvana from Jala-mandira, Pavapuri nagara, Bihara Pranta.

Dipak is a symbol of light of attainment of enlightens & we've to abolition of darkness fascination to get complete knowledge.

Unique way of celebration: Jains as a religion gives more stress on simplicity. Unlike other religious practices in India, who celebrate Diwali with lots of fire crackers, noise, songs and dances, Jainism follows a different form of celebration altogether. To them, physical triumph and pomp are just worldly emotions of joy and gratification. In many temples special Laḍḍūs [a type of sweet] are offered particularly on this day.

PETA *Diwali devoid of firecrackers: Harm Effect Of Firecrackers Commonly Is Visible Plenty At Worthily & Then What Would Be Indirect Affects Us Can't Imagine Just Have To Think Before Fire To A Sky shoot Or Bomb...*

Let each one of us take a pledge this Diwali to say NO to firecrackers and invest in a safer and greener future. Diwali is the festival of lights and we must enlighten our lives with the sparkle of joy and goodwill, forget past grievances and look ahead towards a brighter and happier future.

Come Diwali and one can hear the sounds of firecrackers exploding from all directions. People of all age groups are fascinated with firecrackers, which form a prominent part of the Diwali celebrations. Firecrackers are known to cause air pollution as well as noise pollution and are extremely harmful for senior citizens and small children.

“Pets such as dogs and cats also suffer on account of firecrackers as animals have a more sensitive sense of hearing than humans.” It is important for each one of us to act as responsible citizens and discourage the use of firecrackers.

Firecrackers can cause hearing loss, high blood pressure, sleeping disturbances and sudden exposure to loud noise can cause temporary or permanent deafness or even result in heart attack. Nausea and mental impairment are also some of the side effects of firecrackers.

According to People for the Ethical Treatment of Animals (PETA) a non-profit organization, awareness should be created for the masses. People need to understand that bursting firecrackers is not trendy anymore. It is important for the government to organize anti-firecracker campaigns and discourage people from bursting firecrackers.

My notion of indrawn feeling tried to compile in the four verses.

दिवाली ~~~ आओ ...दिवाली पर वीर प्रभु निर्वाण को स्मरणोत्सव के रूप में मनाये,
पटाको से जीवो को नहीं, ज्ञान-दीप से आत्मा को सजाये व् कर्मो जलाये !

गणेश ~~~ आओ ...गणों में ईश [गणेश-गणधर] के केवलज्ञान की भव्य पूजा रचाए,
धन लक्ष्मी की नहीं, केवलज्ञान और मोक्ष लक्ष्मी की भावना भाए !

धनतेरस ~~~ आओ ...धन्य त्रयोदशी से रत्नत्रय को पाकर जिनवाणी का मर्म समझ जाये,
वीतराग-रस पान-कर, त्रयोदशी से अपने जीवन को धन्य कर जाये !

गोवर्द्धन ~~~ आओ...जिनवाणी की सच्ची पूजा..संयम ले, हम भी गो का वर्धन करजाये,
आत्म व् लोक कल्याण, की भावना ले जग को कैवल्य से जगमगाए !

पटाके जलाना जिनेन्द्र देव की वाणी का अपमान है !

"अहिंसा परमो धर्मः"

SAY "NO" TO "FIRECRACKERS"

"वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहा, मार्ग बताया है जो जग को, कह न सके कोई और यहाँ"

Sources: Harivansa Puraṇa, Uttara Purana, Various magazines, Scholars/Wise peoples Article, Acarya/Sage preaching and so on,
after collection of content, Compiled by - **NIPUN JAIN**

www.jinvaani.org | www.wuistudio.com @ e-Storehouse

Download freely Jainism Precious Preaching Series & Devotional Psalm [Still Downloaded 95,673 Times]